BAOU Education for All
NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4
॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

आधुनिक और पौराणिक धरातल पर “एक कण्ठ विषपायी”

प्रा.डॉ॰भरतकुमार॰वी॰भेड़ा
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शासकीय कला महाविद्यालय, राणावाव
जिल्ला:पोरबंदर,गुजरात

❖ सारांश

पौराणिक विषेयक गाथा जाति विशेष की इतिवृतात्मकता के सौन्दर्यात्मक मूल्य तरीकों के कोष के रूप में मानी जा सकती है। उपभोगतावादी परिवेश की वास्तवविकता और यंत्रणा से त्रस्त होकर अनेकानेक साहित्यकारोंने ऐतिहासिक पहलुओं को खोजने और रहस्ययुक्त परतों खोलने का प्रयत्न किया है| यांत्रिक सभ्यता की असंगतियों से त्रस्त परिवेश में पुरातत्व के माध्यम से पीड़ा और यंत्रणा की अभिव्यक्ति की गयी है| मूलत: धार्मिकता और पौराणिकता के दामन पकड़कर कहीं न कहीं आधुनिकता की विभीषिका पर चौट करने का प्रयास किया गया हैं | शिव के माध्यम से आधुनिक और अति आधुनिक सभ्यता की पहचान दुष्यंतकुमार अवश्य करवाते है, किन्तु सहिष्णुता की धरातल मानव का असहाय रूप भी दृष्टव्य होता हैं | प्रतिशोध की आग में जलता मनुष्य आज शिव की तरह सवेदनशील भी नहीं है | परिस्थितिवश अपनी आदम्य इच्छा की पूर्ति हेतु मानव संहार करने में पीछेहट करता नहीं हैं |

❖ चाबीरूपी शब्दों:

पौराणिक पहलू, आधुनिक सभ्यता, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, अभावग्रस्तता, युद्ध की विभीषिका, नवीनतम विचारों का आगमन |

❖ आधुनिक और पौराणिक धरातल :-

दुष्यन्त कुमार की रचनाएँ सांप्रत समय की आवश्यकता का जीवन्त पुलिंदा है|अपने बहुस्तरीय व्यक्तित्व की वजह से दुष्यन्त कुमार ने विश्व और भारतीय समाज को सम्पूर्णता में देखा है | उन्होंने आम आदमी की पीड़ा, उत्तेजन, दुख, अभावग्रस्ता और उनके आपसी सम्बन्धों की गुत्थी को अपने काव्य में व्यक्त किया है| मिथकीय चेतना से भरपूर ‘एक कंठ विषपायी’ खण्ड काव्य में प्रतीकात्मकता के माध्यम से आधुनिक धरातल

नये मूल्यों का आंकलन किया गया है| परम्परा या रूढ़ि को आधुनिकता का लिबास पहनाकर ही मनुष्य सत्य से अपना नाता जोड़ सकता है| समय के महत्व की शिनाख्त करके नये मूल्यों को स्वीकार करने से ही समस्त मानव जाति का कल्याण होता है| 'एक कंठ विषपायी की कथा परम्परा से और रूढ़ियों से मुक्ति की कहानी हैं | नयी कविता युगीन सन्दर्भों में आधुनिक भाव-बोध और सौन्दर्य –बोध के स्तर पर खड़े मानवीय परिवेश को पूर्ण वैविध्य के साथ नए शिल्प में प्रस्तुत करने वाली काव्यधारा हैं| वह प्रत्येक क्षण लघु मानव और समकालीन जीवन से अनुप्रेरित अनुभूतियों को मुक्त पद की पीठ पर नए तकनीक में पाठकों तक संप्रेषित करके आस्वाद्य बना रही हैं | (1)पृ.-104

नयी कविता के साहित्यिक भाव-भंगिमा में पौराणिक बोध और आधुनिकता के समन्वित वैचारिकता का आधार निरुपित हैं | दुष्यंतकुमारने युगीन सरोकर और परिवेशगत स्थितियों से प्रेरणात्मक पृष्ठभूमि तैयार की हैं| 'एक कंठ विषपायी' जिस युग की रचना है,जिनके अंतर्गत विघटनकारी तत्व पनपते हैं | आज हमारे सामने आस्था, अनास्था व्यक्तित्व, खण्डित व्यक्तित्व, युद्ध और शांति आदि कई समस्याएं हैं| 'एक कंठ विषपायी' रचना में आधुनिक जीवन की यथार्थ परिस्थितिओं का सटीक निरूपण हुआ हैं| किन्तु आवाम के संवर्धन का जिम्मा जिनके कन्धों पर है, उनमें संवेदना का अभाव रहा है, जिनसे आवाम की आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है। रोटी , कपड़ा और मकान मूल कामना परिपूर्ण नहीं होती हैं | युद्ध के लिए तत्पर शासकीय कर्ताओं की निष्क्रियता मानो, सामान्य जन-जीवन के लिए कदम-कदम पर मोहताज बनने के लिए विवश हैं | जैसे सर्वहत कहता है कि -

"तुम मुझको चुल्लू भर रक्त
पिला सकते हो?
आह ! आज मैं प्यासा हूँ"। (2) पृ-115

आजादी के पश्चात भारतीय सामाजिक व्यवस्था की जडें ओर भी ज्यादा खोखली साबित हो रही थी | शासकीय पक्षों के निहायती प्रपंषयुक्त राजनीतिक विचारधारा से गरीब अधिक गरीब और पूंजीपत्ति अधिक से अधिक बलवंत होता जा रहा था | न्याय प्रणाली को भी आर्थिकता के बलबूते पर प्रभावित किया जाना संभव लगता हैं | गर्भश्रीमंत, उच्ची जान-पहचान, उच्च कुल में जन्म लेना आदि के लिए विशेष सुविधाएँ-सवलतें उपलब्ध की जाती हैं | जिसका सत्यापन निम्न अवतरण से होता हैं | जैसे, सर्वहत उस तथ्यों उजागर करता हैं,-

बतलाओं -मुझमें या शिव में क्या अन्तर है?
यहीं न कि मैं तो सर्वहत हूँ
-साधारण हूँ
और वो विशिष्ट देवता है, शिव शंकर है!
किन्तु प्यास दोनों की एक-सी है| (3) पृ.118

प्रेम विवाह को आधुनिक युग में जटिल समस्या के रूप में परिभाषित किया जाता हैं| किन्तु जन साधारण ज्ञातव्य नहीं है कि पौराणिक समय का गन्धर्व विवाह ही आधुनिक युग का प्रेम विवाह हैं | प्रस्तुत काव्य नाट्य में दुष्यंत कुमारजी मानव जीवन के नवीनतम एवं परिवर्तित पहलुओं के पक्षधर रहे हैं | उन्होंने 'एक कंठ विषपायी' काव्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक,राजनीतिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं पर व्यंग्यात्मक और वेधक बाण चलाए हैं| सामाजिक जीवन में जीवन साथी का चुनाव करना स्वतन्त्रता की निशानी हैं| किन्तु समाज के प्रबृद्ध पहरीओं द्वारा यह समझने का प्रयास नहीं किया जाता कि जीवन साथी चुनने का अधिकार एवं योग्यता नई पीढ़ी की स्वभावगत विशेषता है| कवि ने प्रेम-विवाह जैसे गंभीर और जटिल सवाल को आधुनिक धरातल पर तीक्ष्णता से उठाया है| सती -शिव के गंधर्व-विवाह को सती के पिता दक्ष द्वारा स्वीकृत करना अपमान समझते हैं| इन्हीं कारणभूत पहलुओं के आधार पर वह, यज्ञ में अपनी पुत्री सती को न्यौता देने के लिए तैयार हो जाते हैं, किन्तु शिव को नहीं। जैसे वह वीरणी से कहते हैं कि -

शंकर ! शंकर !!
वह, जिसने घर की परम्परा तोड़ी है,
वह, जिसने मेरे यश पर कालिख पोती है,
जिसके कारण/ मेरा माथा नीचा है सारे समाज में,
मेरी ही घर अतिथि-रूप में आये?(4) पृ.11

प्राचीन परंपरागत विचारधारा के अंतर्गत स्त्री का ब्याह पिता की पसन्द अथवा अनुमति से होने प्रमाणित माना जाता हैं | किन्तु लड़कियाँ आधुनिक रवैये को आत्मसात करते हुए, अपनी पसंद के पुरुष या लड़के से शादी रचाती हैं| तो क्या उसे अपहरण समझा जाना चाहिए? प्राचीन परम्परा को तोड़कर सती ने शंकर से गंधर्व विवाह किया हैं| जिनको सती के पिता दक्ष ने प्रेम विवाह की वजह से शंकर को दोषी करार देकर अपहरण की संज्ञा से नवाजा जाना कहाँ तक सही लगता हैं| जैसे –

हाँ, अपहरण| देवि !
मैं निश्चय ही इसको अपहरण कहूँगा
क्या अबोध मन को फुसलाकर
देवत्वों का जाल बिछाकर
अपहरण नहीं है?
सती बालिका थी
अबोध थी। (5) पृ.13

प्रस्तुत काव्य नाटक में दुष्यंत कुमार ने आधुनिक धरातल पर इस सामाजिक समस्या के प्रति नवीन वैचारिक दृष्टिकोण अपनाया है| निम्न में उल्लेखित पंक्तियाँ वास्तव में दक्ष का समझौतावादी कथन लगता हैं, किन्तु साथ ही एक पिता के अहम भावना की छटपटाहट भी देखने को मिलती हैं | कि-

यदि शंकर की सती कामना थी
तो सीधे मुझसे कहता |
देवलोक में
इतनी परिचर्चा की क्या आवश्यकता थी?
क्या आवश्यकता थी बोलो
इस रूपक के आलम्बन की
व्यर्थ प्रेम के नाम
हमारी लोक हँसाई बदनामी की (6) पृ.18-19

शिव-सती विवाह संबंध का अंतिम स्वरूप सती के आत्मदाह के रूप में परिणत होता है| शिव सती के मृत शरीर को कंधे पर ढोए युग की पौराणिक सभ्यता को भस्म कर देने का आह्वान करता है | वस्तुतः यह मृत परम्पराओं और रूढ़ियों युक्त विचारधारा के शव को वर्तमान युग में भी सीने से चिपकाए रखने की घटना की ओर संकेत था| किन्तु साथ ही पौराणिक विचारधारा का चिपकूपन आज के उत्तर आधुनिक युग की विकास यात्रा पर अवरोध उत्पन्न करने की कौशिश हैं| 'एक कंठ विषपायी' नाटक की घटनाएँ और सभी चरित्र प्रतीकात्मक के पुतले हैं| कवि ने वर्तमान जीवन की वास्तविकता को उजागर के लिए पौराणिक संदर्भ को नए परिधान पहनाए है। कवि के शब्दों में "उसी दिन मुझे लगा था कि जर्जर रूढ़ियों और परम्परा के शव से चिपटे हुए लोगोंके संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि और नये मूल्यों को संकेतित करने के लिए इस कथामें पर्याप्त सामथ्र्य है| ''(7) पृ.7

'एक कंठ विषपायी' में भी कवि ने पार्वती के शव को मृत परंपरा का पोषक माना हैं आधुनिक युग के अंतर्गत मानव जीवन विभिन्न समस्याओं और उलझनों से घिरा हुआ हैं| मृत परम्पराओं और रूढ़ियों के प्रति उनका लगाव उनके विनय एवं ज्ञान को निष्प्राण बना रहा हैं| किन्तु शिव के द्वारा सती के मृत शरीर से प्रेम, परम्परा एवं रूढियों से प्रेम होना संप्रेषित करता है, जो मूलत: सत्य को बाधित करता है| महादेव की सती के प्रति अत्याधिक अनासक्ति ने उनकी सम्यक दृष्टिकोण को भस्मी-भूत कर दिया है? क्या प्रेम माया से बंधा हुआ मानव अंधे के समान हो जाता हैं कि वह मृत्यु की सनातन अवस्था को भी देख पाता हैं| मोहपाश में पड़ा हुआ व्यक्ति परिवर्तन के आसार से भी असंतुष्ट और हमलावर हो उठता हैं| परिवर्तन तो सनातन सत्य है,बदलाव की आकांक्षा ही सांसारिक पहलुओं सुनियोजित करती हैं| इस बात को शिव-शंकर आत्मसात करना नहीं चाहते है| जैसे-

"शंकर-कैलासनाथ
अपने स्कन्धों पर
भगवती सती का अधझुलसा शव लटकाये
गहन मनस्ताप की विषमता से भरमाये" (8) पृ.54

शिव की विचार शैली मूलत: सम्यक एवं समन्वयवादी रही हैं| व्यक्तिगत विचारधारा स्वार्थ की ओर जुकाव न रखकर समष्टि के मंगलमय की कामना सदैव करते रहे है| यद्यपि देवताओं द्वारा उन्हें

देवत्व एव आदर्शों झूठा पायजामा पहनाकर छलने का प्रयास किया गया हैं| जिन्होंने परम्पराओं और रुढियों का पालन किया था| आज वह लोग आस्थाओं के अंधकार में जूझ रहे हैं| जिन्होंने समग्र युग के सटीक विरोध के बावजूद भी सड़ी-गली रूढ़ियों और परम्पराओं का अन्वेषण किया था | वे लोग भी आज अनास्था व् निराशा में डूबे हुए हैं| इस आशावाद के साथ अतीत से आगे आगत की नवीन आस्थामयी चेतना का सृजन संभव होगा | संवेदना व्यक्त करते हुए, शिव कहते है कि-

"देवत्व और आदर्शों का परिधान ओढ़
मैंने क्या पाया?
निर्वासन !
प्रेयसि-वियोग !
इस महिमा-मंडित छल से,
अब मुझे स्वयं का
वास्तव-सत्य पकड़ना हे" (9) पृ.79

आधुनिक युग की बौद्धिक धरातल पर सम्बन्धों की परिपक्वता में दरारें पड़ने लगी हैं| तब रिश्तों में कड़वाहट आती हैं| संबंधों की औपचारिकता के कारण शंकर की आत्मा विद्रोह करके अपने अपमान का
प्रतिशोध लेने के लिए व्याकुल है| इन्द्र और वरूण व्यक्तिवादी राग शक्तियों और कुबेर व्यक्तिवादी पूंजी-पति का प्रतीक है| शंकर इनकी औपचारिकता पूर्ण मित्रता से शोषित होकर इन व्यक्तिवादी शक्तियों द्वारा निर्धारित विधि-निषेध के प्रति विद्रोह कर देते है| मित्रता, अपनत्व और दिखावे के सम्बन्धों की बुनियाद पर अपनी रोटियाँ सेकनेवालों को सचेत रहने की हिदायते देते हैं| क्योंकि झूठे और फरेबी युक्त रिश्तों की पहचान उनके षडयंत्र से हो जाती है| क्योंकि प्रस्तुत काव्य नाट्य में वरुण और कुबेर द्वारा शंकर के मित्र होने का झूठा स्वांग रचा था | किन्तु ऐसे लोगों को आहवान करते हुए शिव कहते है कि-

"मित्र अगर होते तुम
मेरा अपयश या अपमान न होता
या तो यज्ञ न होता
अथवा ऐसा कल्कि विधान न होता
मित्र अगर होते तुम
मेरी आत्मा यों विद्रोह न करती,
भरी सभा में मेरी प्रिय
निरादृत होती और न मरती"|(10)पृ.82

जिस प्रकार पोखर में जमा हुआ पानी कुछ दिनों के बाद सड़ने लगता हैं| वैसे ही मृत परम्पराएँ एवं पुरानी रूढ़िवादी सोच, मानव जीवन में नवीन परिवर्तन को बाधक बनाता हैं| शिव का सती के शव को कंधे पर लटकाकर रखना इस बात का प्रमाण हैं| वास्तव में अधिकांश लोग शिव है और उसके ह्रदय से चिपकी हुई रुग्ण परम्पराएँ और मृत प्रायः रूढ़ियाँ सती का शव है| मूलतः परम्परा का टूटना और नवीन मूल्यों की स्थापना रूढ़िवादी लोगों को बर्दास्त नहीं हो पाती हैं| सती के सड़े गले शव के समान आज भी पौराणिक मान्यताएँ एवं अंधविश्वास से वातावरण दूषित हो

रहा हैं| शव की सड़ी हुई दुर्गन्ध की तरह ही युगों से चली आ रही परम्पराएँ भी आगे चलकर सड़ जाती हैं| नए मूल्यों को प्रस्थापित करने के लिए युद्ध अनिवार्य होते हैं| प्रस्तुत काव्य नाट्य में विष्णु चरित्र परिवर्तन का संवाहक बनकर उभरा हैं|

शंकर का मोह भंग करने के लिए अनेक बाण छोड़ने वाले विष्णु स्वीकार करते हैं कि प्राचीन परम्पराओं के विध्वंश होने पर ही नवीन कुंपले अंकुरित होंगे,जो वास्तव में परिवर्तन का प्रतीक है| विष्णु शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर मूल्यों की स्थापना तथा प्राचीन रूढ़िगत परम्पराओं का निरंतर विरोध करते हैं –

"हर परम्परा के मरने पर थोड़े दिन तक
सारा वातावरण शून्य से भर जाता है|□ पृ.(11)122

मूलतः शंकर का पत्नी विरह में पीड़ित एवं व्यथित होना लाजिम है क्योंकि पत्नी वियोग के दुःख मुख्य को कारण बनाकर स्वयं को नवीन सत्य से न जोड़ पाना ही है| प्रस्तुत काव्य नाट्य में दुष्यंत कुमार ने प्रजापति दक्ष को परम्पराओं का संवाहक और शिव उन्हें तोड़कर नवीन एवं परिवर्तित मूल्यों को प्रस्थापित करने वाले साधारण मानव का प्रतीक के रूप में चित्रित किया है| दक्ष की पत्नी वीरिणी कथन है कि लौकिक मर्यादाओं एवं मान्यताओं का पालन करने के लिए कई दफा इच्छाओं के विरुद्ध भी कार्य करने पड़ते हैं| रिश्ते चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक आत्मीयता की हवा का बहाना आवश्यक बन जाता हैं| न कि घृणा, हठ और अनिच्छा से शंकर ने हठ करके संबंधों की मधुरता को समाप्त किया हैं किन्तु वीरणी का मानना है कि लौकिक सम्बन्धों में इच्छा-अनिच्छा का कोई आधार नहीं होता है|

बल्कि किसी विवश क्षण में हम परस्पर जुड़ जाते हैं| यह परिस्थितिवश जुडाव सम्बन्ध बन जाता है| दक्ष की पत्नी वीरिणी कहती है की शंकर ने सती का अपहरण किया हैं| इस कृत्य से दक्ष की सामाजिक प्रतिष्ठा अवश्य अपमानित हुई है| वह अपनी लोक प्रतिष्ठा की हत्या का बदला लेने के लिए शिव और सती की उपेक्षा करता है|जबकि शंकर अपमान और उपेक्षा से पीड़ित अपनी पत्नी के प्रति अदम्य मोह के कारण अपमान का बदला लेने के लिए संकल्पबद्ध हो उठते हैं|शंकर के शोक की घनीभूत पीड़ास्वाभाविक है| सती के शव की दुर्गंध आधुनिक युग में परम्पराओं के मरने पर विषाक्त एवं अर्थही न हो जाने पर समाज को उनसे दुर्गन्ध अर्थात अनिष्ट का कार्य ही करती हैं| तभी तो वरुण कुबेर से कहते है कि-

"ऐसा भी क्या मोह
कि शिव को चिपटाये फिरते है तन से !
....क्या तुमको
दुर्गन्ध नहीं आयी उस क्षण से?
मैं तो खड़ा नहीं रह पाया
पास निमिष भर" (12) पृ-85-86

'एक कंठ विषपायी' काव्य नाटिका में दुष्यन्त कुमार ने मृतपाय रूढ़ियों और दुराग्रही परम्पराओं के प्रतिबिंब से चिपके हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि में चित्रित किया हैं|

आधुनिक युग हमारी परम्परागत मर्यादाओं व मान्यताओं के विघटन का साक्षी है|यहाँ रोज मान्यताएँ व मर्यादाएँ परिवर्तित होती हैं,टूटती है और फिर बनती है| मान्यताएँ जहाँ तक हमारी सहायक रही है, वहाँ तक उनका पालन करना तर्क संगत है| परम्पराओं का रूढ़िरहित होकर ही पालन करना चाहिए | मर्यादाओं व मान्यताओं का विघटन आज के समय में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही दिशाओं में हुआ है| मानवीय चेतना की सार्थकता इसी में है कि वह विघटन का सकारात्मक रूप साकार कर सके और मर्यादाओं के विघटन को अपने विघटन की नियति न बनने दें|

दुष्यन्त कुमार ने पौराणिक संदर्भ को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करके नवीन वैचारिकता को व्यक्त किया है| इस कथा में दक्ष एक अहंकारी शासक के प्रतीक हैं| धन संचय के प्रतीक कुबेर है, सर्वहत,शिवपरम्परा से पीड़ित और समस्याग्रस्त जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं| जब शासक का कार्य व्यवहारप्रजाविमुख हो जाता है, तब प्रजा की संवेदना उसे पद से हटाने की ताकत रखती है| विष्णु द्वार छोड़ा गया प्रणमी बाण शक्ति का प्रतीक है| जो समाधान के हेतु छोड़ा जाता है| वीरिणी और सती आधु निक नारी कीप्रतीक है| जिन्होंने पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के प्रति असंतोष प्रकट किया है| कवि ने राष्ट्र नियामकों की हृदयहीनता तथा विरोधियों की भूमिकाओं का भी यथार्थ चित्रण किया हैं| इंद्र, वरुण,कुबेर, जो देश विरोधी नेताओं के प्रतीक है,जो देश को युद्ध की आग में झोंककर अपनी रोटियाँ सेंकना चाहते हैं| ब्रह्मा, विष्णु जनकल्याणकारी है, तकरीबन सभी चरित्र प्रतीकात्मक रूप में हैं|

संदर्भ -

1. 'नयी कविता का मूल्यांकन',- डॉ. हरिचरण शर्मा, पृ -104
2. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार - लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-115
3. वहीं, पृ.-118
4. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार - लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-11
5. वहीं, पृ. -13
6. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार - लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-18-19
7. एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार - लोकभारती प्रकाशन,सं. 2013 पृ.-7
8. एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार- लोकभारती प्रकाशन, सं.2013 पृ.-54
9. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार- लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-79
10. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार- लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-82
11. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमा- लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-122
12. 'एक कंठ विषपायी', दुष्यन्त कुमार- लोकभारती प्रकाशन, सं. 2013 पृ.-85-86